नयी दिशा, नयी उषा

मैं अंध की लाठी हू ।
मुझे बोलना है एक कहानी ।
मेरी कहानी,
और मेरी मालिक का भी

मैं और मेरी मालिक,
साथ-साथ थे, जन्म से
बड़ा हुआ मालिक, मेरी साथ चलकर, खेलकर।
मज़ा के दिनों था वह..!

तेज़-तेज़ भागा समय,
और मैं भी, लेकिन मेरी मालिक की इच्छा के अनुसार
कठिन रास्ते में गिरा, मेरी मालिक,
लेकिन पकड़ा मैंने इसको, सिर्फ मैं..!

मालिक को दिखाया मैं, सच्छ की रास्ता
और साथ चला हम
अंधेरे और समस्या से भरे रास्ते
पार करा मेरी मालिक, मुझे पकड़कर

पूँछा सब, 'दर्द है क्या..?'
हाँ, ज़रूर, दर्द हुआ
रास्ते में सब मुझे दर्द दिया मुझे
सह लिया मैं सब कुछ, ~~बस~~ सिर्फ मेरी मालिक केलिए

एक दिन आया उजल
मेरी मालिक की आखों में
उसे सबकुछ देख पाया, सब कुछ, मुझे भी
खुशी से भरा मेरा मन... सिर्फ खुशी से।

लेकिन उस उजल में भूल गया मेरी मालिक
मुझे और मेरी 'मदद' को

मैं सिर्फ एक लाटी हू, कौन याद करेगा...?
फेंक दिया मुझो, अंधेरे में।

मालिक गया, नये शस्त्रे से,
और मुझों भी जाना था, नाथा दिशा से
अकेले, अकेले
घोर अंधेरे से भरे शस्त्रे थे।

भयभीन से खड़े मेरी और,
आई एक रोशनी
चांद की रोशनी और
दिखाई मुझो एक शस्त्रा, सत्य और न्याय की ओर!

हा... आई मेरी जीवन में भी
एक उषा..
और मुझो दिखाई
सच्छ की दिशा..!